



Hargharpanditji

॥ श्री आमलकी एकादशी व्रत कथा ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री आमलकी एकादशी व्रत कथा ॥

फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की आमलकी एकादशी भगवान श्रीहरि विष्णु को अत्यंत प्रिय है। इस एकादशी का वर्णन ब्रह्माण्ड पुराण में मिलता है।

इस दिन आँवले (आमलकी) के वृक्ष तथा भगवान श्रीविष्णु का पूजन विशेष फलदायी माना गया है। आमलकी को भगवान विष्णु का प्रिय वृक्ष माना गया है और इसे धर्म, आरोग्य तथा दीर्घायु का प्रतीक कहा गया है।

श्री आमलकी एकादशी व्रत कथा

एक समय धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा—

"हे जनार्दन! फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का क्या नाम है?

कृपया उसका माहात्म्य और व्रत कथा सुनाइए।"

भगवान श्रीकृष्ण बोले—

"हे धर्मराज! यह एकादशी 'आमलकी एकादशी' कहलाती है। इसका व्रत समस्त पापों का नाश करने वाला और भगवान विष्णु की विशेष कृपा प्रदान करने वाला है। अब इसकी पावन कथा सुनो।"

प्राचीन काल में वैदिशा नाम की नगरी में चैत्ररथ नामक एक धर्मात्मा राजा राज्य करते थे। राजा भगवान श्रीहरि विष्णु के परम भक्त थे। उनकी प्रजा भी धर्मपरायण, सत्यवादी और भगवान की भक्ति में लीन रहती थी।

फाल्गुन शुक्ल एकादशी के दिन राजा तथा समस्त प्रजा ने विधिपूर्वक व्रत रखा। नगर के बाहर स्थित एक विशाल आँवले के वृक्ष के नीचे भगवान श्रीविष्णु की प्रतिमा स्थापित की गई। सभी ने धूप, दीप, पुष्प, नैवेद्य अर्पित कर भगवान की पूजा की तथा रात्रि भर भजन-कीर्तन और जागरण किया।

उसी समय एक बहेलिया (शिकारी), जो अपने जीवन में अनेक हिंसक कर्म करता था, भोजन की खोज में वहाँ पहुँचा।

उसने देखा कि सभी लोग भगवान की पूजा कर रहे हैं। वह भी वहीं बैठ गया और पूरी रात भगवान की कथा तथा भजन सुनता रहा। अनजाने में उससे भी एकादशी का उपवास और रात्रि-जागरण हो गया।

कुछ समय बाद उस बहेलिए की मृत्यु हो गई। आमलकी एकादशी के व्रत और भगवान विष्णु के स्मरण के प्रभाव से उसे अगले जन्म में वसुरथ नामक एक तेजस्वी और धर्मनिष्ठ राजा के रूप में जन्म मिला। राजा वसुरथ न्यायपूर्वक राज्य करने लगे और भगवान विष्णु के परम भक्त बने।

एक दिन वे शिकार के लिए वन में गए। वहाँ अनेक दुष्ट म्लेच्छों ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया और मारने का प्रयास किया। उसी समय भगवान विष्णु की दिव्य शक्ति से एक तेजस्विनी देवी प्रकट हुई। उन्होंने उन दुष्टों का संहार कर राजा वसुरथ की रक्षा की।

जब राजा को होश आया तो उन्होंने आश्चर्य से पूछा—

"मेरी रक्षा किसने की?"

तभी आकाशवाणी हुई—

"हे राजन्! पूर्व जन्म में तुमने आमलकी एकादशी के दिन भगवान विष्णु का स्मरण किया था और रात्रि-जागरण किया था। उसी पुण्य के प्रभाव से भगवान श्रीहरि ने आज तुम्हारी रक्षा की है।"

यह सुनकर राजा भगवान विष्णु के प्रति और अधिक श्रद्धावान हो गए तथा जीवनभर धर्म और भक्ति के मार्ग पर चलते रहे।

भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा—

"हे धर्मराज! जो श्रद्धा और नियमपूर्वक आमलकी एकादशी का व्रत करता है तथा भगवान विष्णु और आमलकी (आँवले) के वृक्ष की पूजा करता है, उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, उसे आरोग्य, सुख, समृद्धि और अंत में मेरे परम धाम वैकुण्ठ की प्राप्ति होती है।

आमलकी एकादशी का महत्व

- इस दिन भगवान श्रीविष्णु और आँवले के वृक्ष की पूजा का विशेष महत्व है।
- आँवले के वृक्ष के नीचे विष्णु पूजन, दीपदान, जप और भजन करना अत्यंत पुण्यदायी माना गया है।
- यह व्रत आरोग्य, दीर्घायु, पुण्य और आत्मशुद्धि प्रदान करने वाला माना गया है।
- दान, सत्संग और रात्रि-जागरण का भी विशेष महत्व है।

कथा का संदेश

- भगवान की सच्ची भक्ति और एकादशी व्रत का प्रभाव अनजाने में किए गए शुभ कर्मों से भी कल्याणकारी हो सकता है।
- ईश्वर अपने भक्तों की सदैव रक्षा करते हैं।
- धर्म, भक्ति और सत्कर्म मनुष्य के जीवन को श्रेष्ठ बनाते हैं।
- आमलकी (आँवला) का वृक्ष प्रकृति, स्वास्थ्य और आध्यात्मिकता का पवित्र प्रतीक है।

आमलकी एकादशी व्रत का फल

जो श्रद्धालु फाल्गुन शुक्ल पक्ष की आमलकी एकादशी का श्रद्धापूर्वक व्रत रखकर भगवान श्रीहरि विष्णु तथा आमलकी (आँवले) के वृक्ष की पूजा करता है, उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, उसे आरोग्य, सुख, समृद्धि, यश, दीर्घायु तथा अंत में भगवान विष्णु के परम धाम वैकुण्ठ की प्राप्ति होती है।

॥ श्री विष्णवे नमः ॥

॥ श्री आमलकी एकादशी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥